

## भारत का सेवा क्षेत्र

यह एडिटरियल 22/07/2024 को 'हट्टि बिजनेस लाइन' में प्रकाशित "Services sector can power up the job engine" लेख पर आधारित है। इसमें चर्चा की गई है कि भारत का सेवा क्षेत्र किस तरह से इसकी अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है और इसके लाभों को पूरी तरह से साकार करने के लिये क्या उपाय किये जा सकते हैं।

### प्रलम्ब के लिये:

[आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24](#), [ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स](#), [सकल इंडिया](#), [मुद्रा योजना](#), [स्टार्ट-अप इंडिया](#), [स्टैंड-अप इंडिया](#)।

### मेन्स के लिये:

भारत के सेवा क्षेत्र का अर्थव्यवस्था में योगदान, भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले प्रमुख क्षेत्र।

भारत में इस बात को लेकर चर्चाएँ जारी हैं कि वह आर्थिक रूप से किस दिशा में आगे बढ़ रहा है और वह अपने वांछित विकास लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। इस बात पर भी बहस चल रही है कि क्या **भारत औद्योगिक (वनिर्माण क्षेत्र) विकास के बजाय सेवा क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता** देकर आगे बढ़ेगा और विकास करेगा।

हाल के समय में सेवा क्षेत्र—जिसमें **वित्त, स्वास्थ्य सेवा, सूचना प्रौद्योगिकी और पर्यटन जैसे उद्योग** शामिल हैं, विकास एवं नवाचार के एक गतिशील इंजन के रूप में उभरा है। वर्तमान में विकसित अर्थव्यवस्थाओं ने धीरे-धीरे अपने आर्थिक संसाधनों को कृषि से वनिर्माण की ओर और फरि सेवाओं की ओर मोड़ दिया है। **चीन, दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में यह प्रवृत्ति अधिक प्रमुखता से प्रकट हुई है।**

भारत के आर्थिक संदर्भ में भी, हालाँकि वनिर्माण क्षेत्र की हसिसेदारी बढ़ाने में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। **भारत डिजिटल अवसंरचना** में निवेश कर, कौशल विकास को बढ़ाकर और नियामक ढाँचे को सुव्यवस्थित कर अपने सेवा क्षेत्र की क्षमता का और अधिक दोहन कर सकता है, जिससे आर्थिक प्रगति और सामाजिक उन्नति को बढ़ावा मिलेगा।

## भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का क्या योगदान है?

- केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री द्वारा हाल ही में प्रस्तुत **आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24** में पछिले तीन दशकों में भारत की **आर्थिक वृद्धि में सेवा क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका** को रेखांकित किया गया है।
- वित्त वर्ष 24 में भारत की अर्थव्यवस्था में लगभग **55% का योगदान** देने वाला यह क्षेत्र **नीतित सुधारों, बेहतर आधारभूत संरचना और लॉजिस्टिक्स** के कारण फल-फूल रहा है।
  - ऑनलाइन भुगतान, ई-कॉमर्स और मनोरंजन प्लेटफॉर्म सहित विभिन्न डिजिटल सेवाओं की ओर तेज़ी से संक्रमण के साथ एक महत्त्वपूर्ण रूपांतरण घटित हुआ है।
- सेवा क्षेत्र ने विकास को लगातार गतिप्रदान की है, जहाँ इसके **सकल मूल्य वृद्धि (GVA)** योगदान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वित्त वर्ष 2024 में, इस क्षेत्र में **7.6% की वृद्धि** हुई, जबकि **सकल GST संग्रह 241.27 बिलियन अमेरिकी डॉलर (20.18 लाख करोड़ रुपए)** तक पहुँच गया, जो वित्त वर्ष 2023 से **11.7% की वृद्धि** को प्रकट करता है।
- सर्वेक्षण के अनुसार, कोरोना महामारी के बाद से सेवाओं के निर्यात में स्थिर गति बनी हुई है और वित्त वर्ष 24 में भारत के कुल निर्यात में इसका **योगदान 44%** रहा। सेवाओं के निर्यात में **भारत विश्व में पाँचवें स्थान** पर रहा, जबकि शीर्ष चार स्थानों पर यूरोपीय संघ (अंतरा-यूरोपीय संघ व्यापार को छोड़कर), संयुक्त राज्य अमेरिका, यूके और चीन रहे।
- सेवा क्षेत्र का विकास आमतौर पर **चकितिसा, वधिकि, मनोरंजन, लेखा (अकाउंटिंग)** और अन्य व्यक्तिगत सेवाओं की बढ़ती मांग के माध्यम से होता है। इन मांगों में वृद्धि निवासियों की बढ़ती व्यक्तिगत आय के साथ-साथ फर्मों द्वारा व्यवसाय प्रक्रियाओं की आउटसोर्सिंग में वृद्धि का परिणाम होती है।

## Services - Fuelling Growth Opportunities

- About 55 per cent of the total size of the economy in FY24
- Services PMI soared to 61.2, touching new heights in March 2024
- Services export accounted for 44% of India's total exports in FY24
- Technology start-ups rose from around 2,000 in 2014 to approx 31,000 in 2023
- E-commerce industry to cross USD 350 Bn by 2030

\*PMI: Purchasing Managers' Index



## भारत के प्रमुख सेवा क्षेत्रों की संभावना:

### ■ पर्यटन क्षेत्र:

- पर्यटन क्षेत्र—जसिने वर्ष 2020-21 में भारत के रोजगार में लगभग 13% का योगदान दिया, रोजगार सृजन के एक प्रमुख संभावित स्रोत के रूप में सामने आया है। यह क्षेत्र आतथिय, यात्रा और सांस्कृतिक, वरिष्ठ एवं धार्मिक पर्यटन को दायरे में लेते हुए टूर गाइड, ट्रैवल एजेंट और स्थानीय कारीगरों के लिये विविध भूमिकाएँ प्रदान करता है, जहाँ नमिन एवं मध्यम-कुशल कामगारों के लिये महत्त्वपूर्ण अवसर उत्पन्न होता है।
  - इन भूमिकाओं में सफलता मज़बूत अंतर-वैयक्तिक, प्रबंधन संबंधी और अनुभवात्मक क्षमताओं पर निर्भर करती है, जो सेवा की गुणवत्ता और आगंतुक संतुष्टि में सुधार के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में इको-टूरजिम से लेकर वाराणसी में सांस्कृतिक पर्यटन, केरल में बैकवाटर आधारित पर्यटन और गोवा में एडवेंचर पर्यटन तक भारत का पर्यटन क्षेत्र विकास एवं रोजगार को बढ़ावा देने की अपार संभावनाएँ प्रदान करते हैं।

### ■ विमानन क्षेत्र:

- विमानन (Aviation) एक अन्य ऐसा क्षेत्र है जहाँ अपार संभावनाएँ मौजूद हैं, जो वृहत एयरपोर्ट परियोजनाओं और बढ़ी हुई क्षमता से प्रेरित है। लैंगिक विविधता के मामले में भी भारत का विमानन उद्योग वैश्विक औसत से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। भारतीय पायलटों में 15% महिलाएँ हैं (वैश्विक औसत से लगभग तीन गुना अधिक)।
- इस उद्योग के वसितार के साथ बढ़ते बेड़े को समर्थन देने के लिये अधिक संख्या में चालक दल सदस्यों, ग्राउंड स्टाफ और फ्लाइट अटेंडेंट की आवश्यकता होगी, जसिसे इस क्षेत्र के भविष्य के लिये प्रशिक्षण एवं भरती में नरितर नविश करना महत्त्वपूर्ण है।

### ■ ई-कॉमर्स:

- अर्थव्यवस्था के 10% से अधिक और कार्यबल के लगभग 8% का प्रतिनिधित्व करने वाले खुदरा क्षेत्र में डिजिटल क्रांति घटित हो रही है, जहाँ 'ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स' जैसे प्लेटफॉर्म छोटे खुदरा विक्रेताओं के उपभोक्ताओं के साथ जुड़ने के तरीके को बदल रहे हैं।
- ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों से जुड़कर छोटे खुदरा विक्रेता अपनी बाज़ार पहुँच का वसितार कर सकते हैं, दक्षता बढ़ा सकते हैं और लॉजिस्टिक्स, ग्राहक सेवा एवं प्रौद्योगिकी में रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकते हैं।

### ■ वित्तीय और तकनीकी सेवाएँ:

- वित्तीय, व्यावसायिक और तकनीकी सेवा क्षेत्र उच्च-कौशल रोजगार का प्रदर्शन कर रहे हैं, जहाँ नवाचार और स्टार्ट-अप के लिये वृहत अवसर मौजूद हैं। पछिले दशक में डिजिटलीकरण, तकनीकी प्रगत और समर्थनकारी सरकारी पहलों के कारण व्यावसायिक सेवाओं में रोजगार लगभग दोगुना हो गया है।
- हालाँकि AI भारत की सेवा नरियात वृद्धि को धीमा कर सकता है, जो एक चुनौती है, लेकिन यह साइबर सुरक्षा, डेटा नजिता और उन्नत विश्लेषण (advanced analytics) में नए कौशल की मांग भी पैदा करेगा।

दृष्टि  
The Vision

## सेवा क्षेत्र के विकास के संबंध में चर्चा के प्रमुख क्षेत्र कौन-से हैं?

- **कुशल कार्यबल की कमी:** सेवा क्षेत्र में तेज़ी से हो रहे **डिजिटलीकरण** के कारण तकनीकी प्रगतिके साथ तालमेल बनाए रखने के लिये कुशल कार्यबल की आवश्यकता है। हालाँकि, प्रासंगिक डिजिटल और उच्च-तकनीक कौशल रखने वाले कामगारों की उपलब्धता में कमी की स्थिति पाई जाती है।
  - भारत में वर्तमान में लगभग 2.2 मिलियन **STEM स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी** उत्पन्न करता है। दुर्भाग्य से, उनमें से अधिकांश में (उनमें पर्याप्त प्रशिक्षण के बावजूद) रोज़गार योग्यता की कमी है।
  - भारत सरकार कार्यबल को आवश्यक कौशल से लैस करने के लिये '**स्किल इंडिया**' और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास पहलों पर ध्यान केंद्रित कर रही है।
- **खंडित सेवा क्षेत्र:** भारत में वर्तमान सेवा क्षेत्र अत्यंत खंडित है। इसकी उत्पादन वृद्धि मुख्य रूप से **उच्च-तकनीक सेवाओं** में है, जबकि इसका रोज़गार सृजन मुख्यतः नमिन मूल्य वर्धित एवं नमिन कौशल सेवाओं में है।
  - बैंक-ऑफिस आधारित सेवा क्षेत्र आने वाले समय में बड़ी संख्या में रोज़गार पैदा करने में सक्षम हो सकता है। हालाँकि, इसे एक व्यवहार्य विकल्प बनने में अभी भी 10-15 वर्ष लगेंगे।
- **वित्तीय संसाधनों तक पहुँच:** वित्त तक पहुँच, विशेष रूप से सेवा क्षेत्र में कार्यरत लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिये, जटिल सिद्ध हो सकती है।
  - क्रेडिट तक पहुँच को सुगम बनाने के लिये **मुद्रा योजना, स्टार्ट-अप इंडिया** और **सर्टिड-अप इंडिया** जैसी कई पहलें क्रियान्वित की गई हैं।
  - ऋण प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना, **ऋण गारंटी योजनाओं की पहुँच का वसितार करना, वैकल्पिक ऋण मूल्यांकन पद्धतियों** को अपनाना और आपूर्ति शृंखला वित्तपोषण में नवीनता लाना ऐसे कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- **जटिल वनियामक ढाँचा:** सेवा क्षेत्र में वनियामक परिदृश्य, यद्यपि सकारात्मक परिवर्तनों से गुज़र रहा है, फेरि भी अत्यंत जटिल है।
  - GST सरलीकरण, **स्टार्ट-अप इंडिया और रयिल एस्टेट (वनियामन एवं विकास)** अधिनियम जैसी पहलों ने अधिक अनुकूल कारोबारी माहौल की दिशा में प्रगति की है, लेकिन आगे और प्रयास किये जाने आवश्यक हैं।
  - एकल खड़की प्रणाली के माध्यम से प्रक्रियाओं को **सरल बनाना, कानूनी प्रावधानों को सुव्यवस्थित करना और सभी प्रशासनिक स्तरों पर सरकारी प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण** करना आर्थिक दक्षता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने की राह की प्रमुख बाधाएँ बनी हुई हैं।
- **डेटा सुरक्षा:** सेवाओं के बढ़ते डिजिटलीकरण के साथ **डेटा नजिता और साइबर सुरक्षा गंभीर** चर्चा का विषय बन गए हैं। इसे देखते हुए, सरकार डेटा सुरक्षा कानूनों और साइबर सुरक्षा नीतियों को बढ़ावा दे रही है ताकि उपभोक्ता डेटा की सुरक्षा हो सके और सेवा क्षेत्र में साइबर सुरक्षा उपायों को मज़बूत किया जा सके।
  - मज़बूत सुरक्षा उपायों को अपनाना, नजिता संबंधी वनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना और **सुरक्षा प्रौद्योगिकियों में नवाचार को बढ़ावा** देना वे प्रमुख चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान किया जाना चाहिये ताकि प्रौद्योगिकीय प्रगति को आत्मविश्वास के साथ अपनाया जा सके।
- **बाह्य आर्थिक अनश्चितताएँ:** अलपावधि में, अनश्चित वेश्विक आर्थिक परिदृश्य और वस्तु मूल्य अनश्चितताएँ इनपुट लागत और सेवाओं की मांग के लिये गंभीर चुनौती पेश कर रही हैं।
  - इस प्रकार, सकारात्मक मांग प्रवृत्तियों को बनाए रखना तथा बढ़ती लागतों एवं प्रतिसिपर्द्धी दबावों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना आने वाले वर्ष में सेवा क्षेत्र की नरितर वृद्धि और प्रत्यास्थता के लिये महत्वपूर्ण होगा।

## आगे की राह:

- **मूल्य संवर्द्धन, उच्च उत्पादकता और युवाओं के लिये कौशल उन्नयन:** कौशल उन्नयन पर अधिक ध्यान देने के साथ-साथ संसाधनों के बेहतर आवंटन की आवश्यकता है।
  - एक सुशिक्षित और स्वस्थ जनसंख्या व्यक्तिगत और राष्ट्रीय उत्पादकता की नींव है।
    - इससे **उत्पादकता बढ़ेगी और मूल्य संवर्द्धन की दिशा में अधिक सार्थक** योगदान संभव होगा। वृहत मूल्य संवर्द्धन से अधिक प्रभावी उत्पाद या सेवाओं का सृजन होता है, जिससे वभिन्न उद्योगों में मूल्य संवर्द्धन होता है।
- **क्षेत्रवार अवसंरचना का उन्नयन:** किसी विशिष्ट क्षेत्र के लिये आवश्यक कौशल को प्रभावी रोज़गार अवसरों और उद्योग विकास में परिवर्तित करने के लिये क्षेत्रवार अवसंरचना का उन्नयन आवश्यक है।
  - उदाहरण के लिये, पर्यटन क्षेत्र के लिये '**हुनर से रोज़गार तक**' जैसी कौशल पहल और 'अतुल्य भारत पर्यटन सुविधाप्रदाता प्रमाणपत्र कार्यक्रम' सही दिशा में उठाए गए कदम हैं।
  - पर्यटन परियोजनाओं के लिये वित्तपोषण की वृद्धि और 'स्वदेश पर्यटन' एवं 'प्रसाद' (PRASHAD) योजनाओं की शुरुआत के साथ अवसंरचना विकास में भी तेज़ी आ रही है।
- **ई-कॉम सेक्टर को बढ़ावा देने के लिये मार्गदर्शन:** ऑनलाइन खुदरा विक्रेता ऑनलाइन बिक्री, कैटलॉगिंग और डेटा नजिता से जुड़ी तकनीकी समस्याओं का सामना करते हैं, जिससे वे डिजिटल अर्थव्यवस्था का पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। इसे संबोधित करने के लिये 'व्यापार ज्ञान केंद्र' (कृषि विज्ञान केंद्र की तरह) जैसी सहायक प्रणालियाँ मार्गदर्शन प्रदान कर सकती हैं, ऑन-बोर्डिंग को सरल बना सकती हैं, तथा नरितर सहायता प्रदान कर सकती हैं।
  - ये केंद्र खुदरा विक्रेताओं को डिजिटल की ओर संक्रमण में मदद करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि **उन्हें ई-कॉमर्स से लाभ मिले तथा वे अधिक समावेशी आर्थिक परिदृश्य में योगदान कर सकें।**
- **लॉजिस्टिक्स संबंधी चर्चाओं को संबोधित करना:** लॉजिस्टिक्स क्षेत्र मध्यम-कुशल कामगारों के लिये पर्याप्त रोज़गार प्रदान करता है। परिवहन में नवोन्मेषी रणनीतियों को अपनाना, जैसे अंतरदेशीय जलमार्गों का उपयोग करना और मार्ग अनुकूलन, गतिशील माल बुकगि, स्वचालित कार्गो प्रबंधन एवं सुव्यवस्थित यात्री शेड्यूलिंग के लिये डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करना, लॉजिस्टिक्स अवसंरचना को बदल सकता है।
- **सेवाओं के लिये उत्पादकता-आधारित आय योजना:** औद्योगिक नीतिके दृष्टिकोण से, विशेष रूप से सेवा उद्योगों के लिये, उत्पादकता-आधारित आय

योजना को संस्थागत बनाने की आवश्यकता है।

- इसके तहत, किसी भी सेवा उद्योग में ऐसी **कंपनियों को, जो श्रम उत्पादकता में वशिष्ट वृद्धि प्रदर्शति** करती हैं (वह भी कामगारों के पलायन के माध्यम से नहीं, बल्कि सचेत कौशल एवं प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से या अग्रणी अनुसंधान एवं विकास और नवाचार की सहायता से), बकिरी/राजस्व पर कर लाभ प्रदान किया जाना चाहिये।
- इससे सेवा उद्योगों को बड़े पैमाने पर कौशल विकास हेतु अधिक नवोन्मेषी **वकिलप की तलाश** करने का प्रोत्साहन मल्लगा; इस प्रकार, मौजूदा कार्यबल और संभावति कार्यबल को उत्पादकता बढ़ाने में मदद मल्लगी।
- **नवीनतम प्रौद्योगिकियों के साथ तालमेल बनाए रखना:** सेवा क्षेत्र में उभरती रोज़गार मांग के लयि वृहत और अधिक केंद्रति कौशल की आवश्यकता है। **वश्व आर्थिक मंच (WEF)** की एक रपिर्त से उजागर हुआ है कि संज्ञानात्मक क्षमताओं (जैसे जटलि समस्या-समाधान और रचनात्मक सोच), **डजिटल साक्षरता और AI एवं बगि डेटा में दक्षता** पर अधिक ध्यान दयिा जा रहा है।
  - यह बदलाव व्यवसायों और **कार्यबल के लयि प्रौद्योगिकीय प्रगतिके अनुकूल** होने तथा वैश्वकि बाज़ार की मांगों को पूरा कर सकने की रणनीतिक अनविरयता को रेखांकति करता है।
  - फोकस क्षेत्रों में **ब्लॉकचेन, AI, मशीन लर्नगि, इंटरनेट ऑफ थगिंस (IoT), साइबर सुरक्षा, क्लाउड कंप्यूटगि, बगि डेटा एनालटिक्स, ऑगमेंटेड रयिलटी, वर्चुअल रयिलटी, 3D प्रटिगि और वेब एवं मोबाइल विकास** शामिल होना चाहयि।

## नषिकर्ष

यदि सही तरीके से उपयोग कयिा जाए तो सेवा क्षेत्र व्यापक रोज़गार सृजन कर सकता है, जहाँ नवाचार एवं अवसर का मेल होगा और आर्थकि विकास में हर तरह के कौशल को मौका मल्लगी। इसे साकार करने के लयि उद्योग, शैक्षणकि एवं कौशल संस्थानों और वभिन्न स्तरों पर सरकारों के बीच नरिबाध एवं नरितर अंतःक्रयिा और समन्वय की आवश्यकता है।

**अभ्यास प्रश्न:** भारत की विकास यात्रा में सेवा क्षेत्र की संभावना पर वचिर कीजयि। संबद्ध चति के प्रमुख क्षेत्रों की चर्चा कीजयि।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????:**

**प्रश्न:** वभिन्न सेवा क्षेत्रकों के बीच सहयोग की आवश्यकता विकास प्रवचन का एक अंतरनहिति घटक रहा है। साझेदारी क्षेत्रकों के बीच पुल बनाती है। यह 'सहयोग' और 'टीम भावना' की संस्कृति को भी गतिप्रदान कर देती है। उपरोक्त कथनों के प्रकाश में भारत के विकास प्रक्रम का परीक्षण कीजयि। (2019)

**प्रश्न.** सामान्यतः देश कृषि से उद्योग और बाद में सेवाओं को अन्तरति होते हैं पर भारत सीधे ही कृषि से सेवाओं को अंतरति हो गया है। देश में उद्योग के मुकाबले सेवाओं की वशाल संवृद्धि के क्या कारण हैं? क्या भारत सशक्त औद्योगकि आधार के बनिा एक विकसति देश बन सकता है? (2014)